OM-4- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 26/04/2021 1:55 PM Page 10

हे सुख! तू कहाँ है?

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

पांडवों ने वनवास और अज्ञातवास पूरा किया परन्तु फिर भी धृतराष्ट्र पांडवों को उनका राज्य देने को तैयार नहीं थे। वे दुर्योधन से डरे हुए, दबे हुए थे। धृष्टद्युम्न, अर्जुन, भीम सर्व युद्ध के लिए उतावले हो रहे थे। तब श्री कृष्ण ने उसे कहा था कि शांति कोई भी प्रकार से मिल जाये तो सौदा सस्ता मानना। श्री कृष्ण को युद्ध के पहले शांति प्राप्त हो जाये तो उसमें भी संतोष था। इसके कारण वे पाँच गांव तक भी मिल जायें तो भी समाधान करने के लिए तैयार हो गये थे।

हम देखते हैं कि जीवन में सब दुःखी हैं, धनवान भी। जिससे एक बात कंफर्म हो जाती है कि पैसा तुम्हें सुख नहीं दे सकता। हाँ, वो आपको कम्फर्ट दे सकता है, मजा दे सकता है, सुविधा दे सकता है, लेकिन सुख नहीं दे सकता, क्यों? इसके उत्तर से पहले ये कहानी पढ़ लीजिए -

एक पत्थर तोड़ने वाला था। उसने एक व्यापारी को देखा। उसके सुख और साहेबी देख उसे संकल्प आया कि काश! मैं भी व्यापारी होता तो! उसके मन में असंतोष की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। वो दिन-रात खूब मेहनत करने लग गया। एक दिन वो सचमुच व्यापारी बन गया। उसका रूतबा चारों ओर फैला था। वो मौज में था। लेकिन पैसे मौज का आयुष्य बहुत छोटा होता है।

एक दिन उसने एक अधिकारी को देखा। उसका रूतबा उस व्यापारी से भी ज़्यादा था। उसको हुआ, काश मैं अधिकारी बनूँ। उसने मेहनत शुरु कर दी। एक दिन वो अधिकारी बन गया। पत्थरतोड़ से अधिकारी बन गया। उसके अहम का पार न रहा। अधिकारी साहब एक दिन सरकार के जाहेर कार्य अर्थ निकले, सिर पर तम-तमाती धूप

थी। वो पसीने से रब-जब हो गये। उसने देखा कि यह तो सब सूरज के कारण हो रहा है। उसको मन में फिर आया कि काश मैं सूरज होता तो! उसने मेहनत की वो सूरज बन गया। वो सारी दुनिया से ऊपर था। किन्तु ये क्या? एक दिन बादलों ने उसे ढक दिया। उसको हुआ कि यह बादल तो मेरे से भी ताकतवर निकले। काश मैं बादल होता तो! फिर एक दिन वो बादल बन गया। पवन बादल को उड़ाकर दूर-दूर तक ले गयी। उसे तीतर-बीतर कर दिया। फिर उसको हुआ कि काश मैं पवन होता तो! फिर वो पवन बन गया। अब वो यहाँ से वहाँ विहारता रहा। धरती पर, आकाश पर, सभी जगह। पहाड़ ने उसे रोक दिया। पहाड़ उससे भी ताकतवर निकला। इसीलिए फिर से उसके मन में आया कि काश मैं पहाड़ होता तो! वो पहाड़ बन गया। अब पवन भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। पहाड़ से शक्तिशाली कौन हो सकता है भला! एक दिन पहाड़ तोड़ने वाला आया और पहाड़ को तोड़ने लगा। उसको हुआ कि काश मैं भी....!

लोभ का कोई थोभ नहीं, इच्छा का कोई अंत नहीं। घूम फिरके हम वहाँ ही आ पहुंचते हैं, जहाँ हम थे। चाहे कितना सारा इकट्ठा कर लें तो भी संतोष होता ही नहीं। बिना तल की बाल्टी में आप जितना चाहे पानी भर लें न तो वो छलकने वाली और न ही भरने वाली। हम जिंदगीभर पैसे के पीछे दौड़ते रहते हैं। अपने को ऐसा सिखाया जाता है कि पैसे के बिना किसी की कीमत नहीं। एक्हार्ट टॉल्ल डिप्रेशन से मुक्त होने की राह दिखाते हैं। वे कहते हैं कि वर्तमान में जियें। वर्तमान यानी, आज,अभी, इसी क्षण आँखों के सामने से जो पास हो रहा है उसे निहारते रहें, उसके भागीदार न बनें। वो क्षण अच्छा है या बुरा, ये तय नहीं करें। बस! वो पास हो रहा है, आप चुपचाप उसे देखते रहें, इतना ही! बीते हुए क्षण में न रूक जाइए। हरेक क्षण पास हो रहा है उसके साथ रहें। ऐसे करने से कोरोना के कठिन काल में भी मानसिक रूप से ज़्यादा मजबूत रह सकेंगे। साथ ही अपना व परिवार का भी ध्यान अच्छे से रख सकेंगे।

परिस्थिति को स्वीकारने की प्रैक्टिस और प्रमाणिकता अपने आप ही सुख-शांति की ओर ले जाती है। इसका मतलब ये नहीं है कि अकर्मी बन जायें। अपना कार्य तो करना ही है परंतु भीतर से अकर्ता बने रहना है। मैं कर रहा हूँ उसका भ्रम छोड़ देना है। और जो प्राप्त है उसको चित्त में रखना सीखना है।

एक बुद्ध साधु थे। वे अपने मठ में बारंबार भाषण देते थे। एक दिन उन्हें एक अंत्येष्टि में बोलना था। बोलने के पांच मिनट पूर्व उनके हाथ कांपने लगे, पसीना छूटने लगा। वे वहाँ से बिना कुछ बोले ही वापस चले गए।

गुरु जी ने उनसे जब पूछा कि आपने भाषण क्यों नहीं किया? तो उन्होंने कहा कि मेरे हाथ कांपने लगे इसलिए। उनकी इस प्रमाणिकता से गुरु जी बहुत खुश हुए। उन साधु ने और आठ वर्ष अभ्याय किया। एक दिन सही में उन्हें वो प्राप्त हो गया जिसकी वे बात कर रहे थे। एक अंत्येष्टि में उन्हें फिर जाना हुआ। उन्होंने वक्तव्य दिया कि हम सभी एक ही तत्व से बने हुए हैं, मृत्यु बाद भी उस एक तत्व में ही मिल जाते हैं।

सुख आपकी स्थिर स्थिति में है, तटस्था में है, अप्रभावित रहने में है। जब हम इसमें कामयाब होंगे तो सुख-शांति हमारे आस-पास छाया की तरह मौजूद रहेगी।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम सपना है। मैं एक कुमारी हूँ। 2010 में मुझे ज्ञान मिला। मेरी लौकिक माता जी ने मेरी जन्मपत्री दिखाई थी तो उसमें कहा था कि मैं ब्रह्माकुमारी नहीं बनूंगी। लेकिन समय बीतते मैं 2014 में सेन्टर पर रहने आ गई। अब सेन्टर पर रहते हुए मुझे दो साल हो गए हैं। मेरी माता जी फिर से जन्मपत्री दिखाने गईं। उनको सब बताया, तो उस व्यक्ति ने कहा कि 2 साल के बाद वो वापिस आ जायेगी। अब ये बात मुझे बहुत तंग करती है। क्या उनकी बात सच होती है? अगर हां तो इसके लिए मैं क्या अभ्यास करूँ जो ये बदल जाये?

उत्तर : इसके पीछे एक विज्ञान भी होता है। मनुष्य के पूर्व कर्म ही इसके लिए ज़िम्मेवार होते हैं। जब हमने अपने कर्मों को ही बदलना चालू कर दिया, हम मानवता की सेवा में लग गये हैं। आपने अपना जीवन प्रभु को अर्पित कर दिया। भगवान ने तो कह दिया है कि जब से तुम मेरे बनते हो बृहस्पति की दशा आ जाती है। हम इसमें विश्वास करें। हमें और कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं है। सभी ग्रहों को वायब्रेशन देकर सहयोगी बनाया जा सकता है। हम अपनी दृढ़ता से, अपने कर्मों से जो भी रेखायें आदि या ग्रह जो होते हैं उनको बदल सकते हैं। योग में तो इतनी शक्ति है कि हम शत्रु ग्रह को भी मित्र ग्रह बना सकते हैं। इसीलिए आपको घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो भगवान कह रहा है वो सत्य होगा। आपने अपना जीवन प्रभु को अर्पित किया है। उसने आपको स्वीकार कर लिया है। अब वो आपको छोड़ेगा नहीं। तो आप ब्रह्माकुमारी हैं और रहेंगी। और मन में सदैव पॉज़िटिव संकल्प रखें। मनुष्य सबकुछ बदल सकता है अगर उसको अपने में दृढ़ विश्वास हो। बाबा(भगवान) में विश्वास रखो। बस वही होगा जो आप चाहेंगी।

प्रश्न : मेरा नाम हरिओम है। मेरा अभी दो महिने का बेटा है। जिसके हार्ट के वॉल्व में चार छेद हैं। और इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है ऐसा डॉक्टर कहते हैं। और इसके कारण उसका मेंटल डेवलप जो है वो भी बहुत स्लो हो रहा है। इसमें क्या कुछ किया जा सकता है?

उत्तर : देखिये कर्मों की गति पुनः यहाँ काम कर रही है। जिस व्यक्ति ने पूर्व जन्मों में किसी का बहुत दिल दुखाया है उसको इन स्थितियों से गुज़रना पड़ता है। बचपन से ही उसको सुख नहीं है। विकास भी धीमी गति से हो रहा है। एक तो आपको, आपके परिवार को बच्चे के नाम से पुण्य बहुत करना चाहिए। भोग लगवाना चाहिए। ब्रह्मा भोजन खिलवाना चाहिए। ताकि बहुत से पवित्र ब्राह्मणों की दुआएं बच्चे को मिलने लगें। आप उनको ये बता सकते हैं कि ये हमारा छोटा बच्चा है, इसको ये प्रॉब्लम है तो इसके निमित्त हम ये कर रहे हैं। सब बच्चे को दुआएं भी देंगे। और सब बच्चे के लिए आधा घंटा योग भी करें। तो सबकी शक्तियां, सबकी दुआएं इनको मिलेंगी। कोई भी उसके लिए रोज़ एक घंटा मेडिटेशन करेंगे ताकि उसके वो विकर्म नष्ट हों जिसके कारण ये चार छेद हैं। और दूसरी विधि है एनर्जी देना। हाथ मलते हुए तीन बार सच्चे दिल से करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर दायां हाथ वहाँ रख दें जहाँ छेद है। अगर बच्चे की माँ करे या बाप करे तो बहुत जल्दी फायदा होगा। अन्यथा जो राजयोग का अभ्यास करते हैं, वो करें। एक मिनट हाथ रखेंगे और संकल्प करेंगे कि जो चार छेद हैं वो सभी भर जायें। और ऐसा दस बार सवेरे और दस बार शाम को कर लें। तीन मास तक ये प्रक्रिया चालू रखें। 21 दिन से ही आपको फायदा पहुंचता हुआ नज़र आयेगा।

प्रश्न : मेरा होलसेल का बिजनेस है और बिजनेस में थोड़ा मंदा चलता रहता है तो मैं ऐसा क्या करूं कि मेरा कलेक्शन भी ठीक हो और साथ ही बिजेनस भी अच्छा चले?

उत्तर : बिजनेस में उतार-चढ़ाव तो रहता ही है, लेकिन मनोस्थिति जितनी अच्छी होगी सबकुछ श्रेष्ठ होता चला जायेगा। इसलिए आपको अमृतवेले उठकर बहुत अच्छा अभ्यास करना चाहिए। और ग्राहकों का संकल्पों से आह्वान करें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है यह सवेरे ही सात बार कर लें। इससे स्मृति भी श्रेष्ठ रहेगी और संकल्प भी सुन्दर होंगे। तो आपका कार्य भी अच्छा चलता रहेगा।

प्रश्न : मेरा नाम सुनंदा है। मुझे एक कन्फ्यूज़न है। एक क्लास में बताया गया था कि जब हम अपने कर्मों के हिसाब-किताब क्लीयर नहीं कर पाते, तो वो अगले कल्प के द्वापर में पदमगुणा होकर हमें मिलता है। लेकिन बाबा की मुरली में कहा गया है कि कर्म के हिसाब-किताब खत्म किए बिना कोई भी परमधाम वापस नहीं जा सकता। कृपया क्लीयर करें कि कौन-सी बात सही है?

उत्तर : पहले जो कहा वो सही नहीं है। कर्मों का खाता यहीं सब समाप्त करके, आत्मा बिल्कुल क्लीन होकर, अपनी मूल स्थिति को प्राप्त करके परमधाम में जायेगी। और द्वापर युग से जो भी थोड़ा खाता शुरु होगा वो वहीं से होगा, और वो बहुत ज़्यादा नहीं होगा। क्योंकि द्वापर की शुरुआत में पाप कर्म भी ज़्यादा नहीं होते और मनोविकार भी ज़्यादा नहीं होते। इसलिए बहुत स्लो गति से वहाँ का कर्मों का खाता चालू होगा। बाकी ऐसा कोई सिद्धान्त नहीं है कि यहाँ का कोई कर्म वहाँ शुरू होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की ख़ुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल